इकाई 1 देश और लोग (पूर्वी एशिया)

इकाई की रूपरेखा

1.0 उद्देश्य

यह इकाई चीन और जापान के इतिहास के पाठ्यक्रम की प्रस्तावना है। लेकिन, इस इकाई में आपको समूचे पूर्वी एशियाई क्षेत्र के कुछ पहलुओं की भी जानकारी दी गयी है। इस इकाई को पढ़ने के बाद—

- आपको दक्षिण-पूर्वी एशिया की भौगोलिक स्थिति की जानकारी होगी,
- आप इस क्षेत्र के प्रदेश, लोग और पारिस्थितिकी आदि से संबंधित विशेषताओं के बारे में जानेंगे, और
- आप अंतर्क्षेत्रीय संबंधों के स्वरूपों की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।

1.1 प्रस्तावना

पूर्वी एशिया के क्षेत्र, इसके लोगों और इसके सामाजिक पर्यावरण या परिवेश की विशेषताओं को लेकर विद्वानों के बीच काफी विवाद रहा है। इस संबंध में भिन्न-भिन्न विचार व्यक्त किए गए हैं। फिर भी, विभिन्न विचारों या मतों के बावजूद, इनमें कुछ समान कारकों को देखा जा सकता है। इन कारकों से हमें संरचनात्मक भिन्नता वाले एक अलग क्षेत्र के अस्तित्व को समझने में मदद मिलती है। इन कारकों से हमें इस क्षेत्र के देशों के संबंधों को भी समझने में मदद मिलती है। इस इकाई में ऐसे ही कुछ पहलुओं पर चर्चा की गई है, जैसे व्यापक क्षेत्रीय संदर्भ में पूर्वी एशिया की स्थिति, क्षेत्र की विभिन्न विशेषताएं, जैसे—आदतें, आबादी, पारिस्थितिकी और क्षेत्र के विभिन्न देशों के बीच आपसी क्रिया।

1.2 पूर्वी एशिया स्थान और काल के संदर्भ में

एक क्षेत्र के रूप में पूर्वी एशिया को उप-महाद्वीप के आकार का बताया जा सकता है। इसकी संस्कृति का स्रोत समान है। यह सांस्कृतिक पहलू ही इस क्षेत्र के देशों को बांधने वाली शक्ति है, जिनके सामाजिक इतिहास, चरित्र और चिंतन का मिश्रण अपने आप में अनूठा है। जब हम पूर्वी एशिया को एक उप-महाद्वीप के नजरिए से देखते हैं तो, चीन और जापान अध्ययन का केन्द्र बन जाते हैं क्योंकि इस क्षेत्र में उनकी भूमिका प्रधान है। लेकिन, इसका यह मतलब नहीं है कि कोरिया या अन्य देशों की कोई भूमिका ही नहीं है।

पूर्वी एशिया को उसकी समग्रता में समझने के लिए हमें काल और स्थान के संदर्भों में इसके विकास पर ध्यान देना होगा। इस अभ्यास से हमें इस सवाल का जवाब देने में मदद मिलेगी कि क्या इस क्षेत्र की अपनी कोई संस्कृति है या उस पर बाहरी प्रभाव है।

सभ्यताओं के विकास की प्रक्रिया में हम कई दौर देख सकते हैं। कुछ प्राचीन नदी घाटी की सभ्यताएं विभिन्न क्षेत्रों में स्वतंत्र रूप से उभरीं और उन्होंने अपनी विशिष्ट संस्कृति बना ली। धीरे-धीरे मनुष्यों ने एक नैतिकता, एक संस्कृति और एक सामाजिक व्यवस्था का विकास होते देखा जो एक अनूठे सांस्कृतिक सांचे के अनुरूप था। इस संस्कृति ने उनकी पहचान को व्यक्त किया।

वर्तमान युग के पहले हजार वर्षों में विकसित सभ्यता के इन केन्द्रों ने अपनी संस्कृति को उन क्षेत्रों तक फैला दिया था जिन्हें आज हम दक्षिणी चीन, कोरिया और जापान के नाम से जानते हैं।

हम यह भी देखते हैं कि भारत-गंगा क्षेत्र की संस्कृति पूर्वी एशिया में दो भागों में होकर फैली—

i) केन्द्रीय एशिया के मार्ग से चीन और फिर कोरिया और जापान तक

ii) समुद्री मार्गों से दक्षिणी पूर्वी एशिया के अन्य देशों—जैसे, चीन और जापान तक।

इन विकासों के जरिए लोग सामाजिक तौर पर अपनी पहचान बना सके और विश्व में अपने संबंधों को निर्धारित कर सकें। भौगोलिक और सांस्कृतिक सीमाओं ने भी विभाजन करने और अंतरों को स्पष्ट करने का काम किया।

1.2.1 व्यापक क्षेत्रीय संदर्भ में पूर्वी एशिया की स्थिति

एशिया का पूर्वी क्षेत्र आर्कटिक चक्र पर बेरिंग जलडमरूमध्य से सुदूर दक्षिण में मलय द्वीप समूह तक फैला हुआ है। महाद्वीपीय आकार के इस क्षेत्र की कोई विशेष भौगोलिक एकता बताना बहुत कठिन है। इस क्षेत्र को तीन बड़े वर्गों में बाँटा जा सकता है—

— पूर्वी-प्रायद्वीपीय क्षेत्र

— दक्षिण-पूर्व का क्षेत्र, और

— एक केंद्रीय मुख्य भूमि क्षेत्र

इनमें से पूर्वी प्रायद्वीपीय क्षेत्र में, तट से लगी पर्वत शृंखलाएँ दक्षिण में बेरिंग जलडमरूमध्य से ओखोत्स्क सागर के दक्षिण-पश्चिमी सिरे तक फैली हैं। ये पर्वत शृंखलाएं अपने पीछे की भूमि को अतिक्रमण से बचाने का काम करती हैं और समुद्री प्रभाव को एक संकरी तटीय पट्टी तक ही रोके रखती हैं। इस क्षेत्र में निम्न भूमि के लम्बे-चौड़े फैलाव नहीं हैं और इसकी जो प्राकृतिक विशेषताएं हैं लगभग सभी लोगों के लिए भयंकर कठिनाइयों का कारण हैं। जाड़ों का समय लंबा और मौसम खराब होता है। फसलें उगाने का मौसम छोटा होता है। और जाड़ों में भूमि पर काफी मोटी बर्फ जम जाती है। इन तमाम प्राकृतिक विशेषताओं के कारण इस क्षेत्र की अपनी अलग पहचान है।

व्यापक क्षेत्रीय संदर्भ में, पूर्वी एशिया में दक्षिण-पूर्वी एशिया भी आ जाता है। भौगोलिक संपर्कों, भाषाई संबंधों और सांस्कृतिक मूल्यों के नजरिए से यह क्षेत्र एशिया महाद्वीप के एक बृहत्तर भाग के रूप में सामने आता है। जहां तक नस्ल का संबंध है, पूर्वी एशिया मंगोलाई मनुष्यों का आवास है, और सांस्कृतिक दृष्टि से इसका संबंध उस सभ्यता से है जिसकी जड़ें प्राचीन चीन में हैं। नस्ल, रंग, धर्म और सभ्यता के कारण पूर्वी एशिया का यह क्षेत्र, विशेषतौर पर दक्षिण पूर्वी एशिया और मध्य एशिया के संदर्भ में, अपना प्रभाव बाहरी दुनिया तक फैलाने में सफल रहा है।

1.2.2 क्षेत्र की विशिष्टता

पूर्वी एशिया के केन्द्रीय क्षेत्र की संरचना उत्तर और दक्षिण में पड़ने वाले प्रदेशों से बिल्कुल अलग किस्म की है। इसमें लम्बी-चौड़ी भूमि का विस्तार आता है जिस पर कोई 175 कि.मी. अंदर तक समुद्र तट आता है और जिसकी पूरी लंबाई मध्य एशिया से लगी है। उत्तर में सुदूर ताईहांग शान तक चली गई खाई, गान पर्वतमाला और ह्वांगहो के ठीक उत्तर में पड़ने वाली उच्च भूमि तटीय क्षेत्र को उत्तरी मध्य एशिया से अलग करती है। तिब्बती सीमा की पर्वत शृंखलाएँ दक्षिण में मध्य एशिया के ऊंचे देश के साथ इसकी सीमा बनाती हैं। महाद्वीप के सीमा प्रदेश पर हाल की भौगोलिक उथल-पुथल उत्तरी क्षेत्र को पूर्व में जापान सागर

से अलग करती है। केन्द्रीय या मध्यवर्ती मुख्य भूमि का क्षेत्र ऐसा अकेला क्षेत्र है जिसमें आमूर, ह्वांग हो और यांगसी जैसी बड़ी नदी व्यवस्थाओं का विकास हुआ है। ये नदी घाटियां पीछे तक इस बाहरी क्षेत्र में होती हुई मध्य एशिया तक फैली हैं।

और विशिष्ट अर्थों में, पूर्वी एशिया का क्षेत्र अपने में एशिया के पूर्वी छोरों और उससे मिले हुए पूर्वी साइबेरिया, चीन, मंगोलिया, उत्तरी और दक्षिणी कोरिया और जापान जैसे कई देशों को समेटे हुए है। इसमें दक्षिण पूर्वी एशिया, फिलीपीन, इंडोनेशिया, मलय प्रायद्वीप और भारतीय उप-महाद्वीप को भी लिया जा सकता है। बहरहाल, यहाँ हम मुख्यतौर पर केवल चीन और जापान जैसे देशों पर ही गौर करेंगे।

1.2.3 प्रदेश और पर्यावरण

वैसे तो पूर्वी एशिया का यह बाहरी क्षेत्र उत्तर, उत्तर-पूर्व से दक्षिण-दक्षिण पूर्व तक पैंतीस अक्षांश तक फैला है, फिर भी आकार की दृष्टि से यह अपने आप में एक पूर्ण क्षेत्र है। आमूर और ह्वांग हो की घाटियाँ मध्य एशिया के किनारे पर पड़ने वाले हिस्सों के उत्तरी भाग के लिए मार्ग बनाती हैं और जेहोल के उच्च या पर्वतीय देश से होकर पश्चिम से पूर्व तक दर्रे हैं। लेकिन तिब्बत का ऊँचा महाद्वीपीय पठार बहुत दुर्गम है, इसे पार करने के लिए घूम कर ह्वांग हो के सहारे या अनेक नदी घाटियों के दक्षिण में पड़ने वाले पठार से होकर जाना पड़ता है।

पूर्व-पश्चिम की बनावट में उत्तर-दक्षिण से कहीं कम स्पष्टता होने के कारण इस क्षेत्र में उत्तर से दक्षिण की ओर जाना पूर्व से पश्चिम की ओर जाने की अपेक्षा कहीं आसान है। उदाहरण के तौर पर, दुजगारी नदी मध्य मंचूरिया से आमूर नदी के निम्नवर्ती प्रसार तक उत्तर की ओर बहती है, जबकि शाहाईक्वान में दक्षिण की ओर उत्तरी चीन के मैदानी भाग में जाने का प्रवेश मार्ग है जो दक्षिण-पूर्व की ओर यांगसी के मैदान से जाकर मिल जाता है और भी पश्चिम की ओर जाने पर, ह्वाईयांग और ताइपे शान के दोनों ओर मार्ग हैं जो दूंग तिंग और पोयांग की खाड़ियों की ओर जाते हैं।

पूर्व पश्चिम की बड़ी नदी व्यवस्था और उत्तर-पश्चिम के प्राकृतिक मार्गों के कुछ क्षेत्रों में, संपर्क अपेक्षाकृत अधिक आसान हो गया है। इन क्षेत्रों में से, जिस क्षेत्र में ह्वांग हो बहकर उत्तरी चीन के मैदानी भाग और निम्नवर्ती यांगसी के मैदानी भाग में पहुंचती है, वह क्षेत्र संचार की दृष्टि से सबसे विकसित है। आकार की दृष्टि से मध्य-पूर्व एशिया के इस बाहरी प्रदेश में महाद्वीप के किनारों पर मिलने वाली विशेषताएं भी पाई जाती हैं और अंदरूनी हिस्सों में मिलने वाली विशेषताएं भी। मध्यवर्ती हिस्से और तटवर्ती हिस्सों के बीच आपसी क्रिया पूर्वी एशिया की अपनी अलग विशेषता है।

भौगोलिक दृष्टि से, जापान इस क्षेत्र में अपेक्षाकृत कटा रहा। महाद्वीप में चलने वाली हवाएं और हवा पानी की बनावट जापान की जलवायु को शीतोष्ण बनाती हैं। जापानी द्वीप एक चाप में फैले हुए हैं जो होकैडो के उत्तर में ठंडे और शीतोष्ण क्षेत्रों से लेकर अर्ध उष्णकटिबंधी जलवायु वाले दक्षिणी रिक्या द्वीपों तक जाता है। पूर्वी और पश्चिमी तट पर बहने वाली एक गर्म लहर एशियाई महाद्वीपीय व्यवस्था के प्रभाव को कम कर देती है। लेकिन होकैडो और होंशू के पश्चिमी भाग में भयंकर हिमपात होता है। होकैडो, होंशू, शिकोकू तथा कौ क्यूशू के चार मुख्य द्वीपों में से लगभग 75 प्रतिशत पर्वतीय हैं। अंतिम बात, जापान तूफान के मार्ग में पड़ता है और पूर्वी तट पर एक गहरी समुद्र खाई होने के कारण वहाँ अनेक भूचाल आते रहते हैं। उसमें सैकड़ों ज्वालामुखी है और ऐतिहासिक फ्यूजी पर्वत तो सबसे अधिक सक्रिय है।

इस पहाड़ों वाले देश में बड़े मैदानी भाग बहुत ही कम हैं। इनमें सबसे बड़ा मैदानी भाग कांटो आज के टोक्यो के आसपास है। ओसाका शहर के आसपास का मैदानी भाग कानसाई कहलाता है। नदियाँ छोटी और तेज़ बहाव वाली हैं और बाढ़ यहां की पुरानी समस्या है। जापान की खेती योग्य अधिकांश भूमि संकरी नदी घाटियों और कछारों वाली भूमि है। पहाड़ियाँ इन्हें एक-दूसरे से अलग करती है, इसलिए भूमि पर संचार कठिन है। यह देश अधिकांश तौर पर वनस्पति और वनों से भरा है।

किसी भी स्थान का पर्यावरण वहाँ की सामाजिक व्यवस्था बनाने में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। पर्यावरण का अध्ययन उसे और चीजों से काटकर नहीं किया जा सकता। यह ध्यान रखना होगा कि पर्यावरण का अध्ययन करने के लिए हमें जलवायु, जल सर्वेक्षण, मिट्टी की स्थिति और संस्कृति जैसे तथ्यों पर ध्यान देना होता है। उदाहरण के लिए, जलवायु बहुत महत्वपूर्ण होती है क्योंकि किसी स्थान की भौगोलिक विशेषताएँ जलवायु बनाने में और देश के लिए इसका महत्त्व निर्धारित करने में मदद करती हैं।

हर सर्दी के मौसम में, प्रत्याशित नियमितता के साथ, साइबेरिया के अधिक दबाव वाले केन्द्र से ठंडी हवाएं दक्षिण-पूर्व की ओर चलकर पूरे बाहरी क्षेत्र में फैल जाती हैं, और कम तेजी के साथ दक्षिण में निकल

जाती हैं। अधिकांश ठंडी हवाएं उत्तर-पश्चिम से चलती हैं। ठंडी हवा दक्षिणी क्षेत्र तक भी जाती हैं, लेकिन इसमें वह तेजी नहीं होती। मिट्टी अधिकांश तौर पर लाल होती है।

पूर्वी एशिया की सांस्कृतिक विशिष्टता में जलवायु का बहुत बड़ा योगदान है। भारत की जलवायु की तरह, पूर्वी एशिया की जलवायु भी अधिकांश तौर पर एशिया के बड़े भू-भाग से निर्धारित होती है। जाड़ों में, गर्म जलधाराओं के प्रभाव से बहुत दूर पड़ने वाले मध्य एशिया में हवा बहुत ठंडी हो जाती है और बाहर की ओर बहती है जिससे महाद्वीप के दक्षिणी और पूर्वी किनारों का मौसम ठंडा और सूखा हो जाता है। गर्मियों में इसका उल्टा होता है। मध्य एशिया की हवा गर्म होकर ऊपर उठती है, और इसका स्थान लेने के लिए नम समुद्री हवा दौड़ पड़ती है और महाद्वीप के किनारे के हिस्सों पर भारी वर्षा कर जाती है। यूरोप से सुदूर दक्षिण में, इन अक्षांशों पर होने वाली भारी वर्षा और तेज धूप के कारण गहन खेती और कई स्थानों पर प्रति वर्ष दो फसलें तक संभव हो जाती हैं।

इस विशिष्ट जलवायु ने पूर्वी एशिया को ऐसी कृषि व्यवस्था दी है जो यूरोपीय क्षेत्र की कृषि व्यवस्था से बिल्कुल भिन्न है। चावल और सोयाबीन पूर्वी एशिया की प्रमुख फसलें हैं। मुर्गी और भैंस इस क्षेत्र के प्रमुख जानवर हैं। पूर्वी एशिया में बड़ी-बड़ी कृषि परियोजनाओं में पालतू जानवर आदमियों की तुलना में कम महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। चीन और जापान का मुख्य आनाज चावल है। बहरहाल, जापान में मछली एक अहम भोज्य पदार्थ है।

बोध प्रश्न 1

1) निम्नलिखित में से कौन-से वक्तव्य सही (√) हैं और कौन से गलत (×)? निशान लगायें।

   i) भारत गंगा क्षेत्र की संस्कृति पूर्व एशिया तक नहीं फैली।

   ii) व्यापक क्षेत्रीय संदर्भ में, पूर्वी एशिया में दक्षिण-पूर्वी एशिया भी आ जाता है।

   iii) मध्यवर्ती मुख्य भूमि क्षेत्र में बड़ी नदी व्यवस्थाओं का विकास हुआ।

2) व्यापक क्षेत्रीय संदर्भ में आप पूर्व एशिया को कहां रखते हैं? लगभग दस पक्तियों में उत्तर दीजिए।

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

1.3 लोग और पारिस्थितिकी

मनुष्य जाति की नस्लों की उत्पत्ति अब भी एक अनजानी कहानी है। होमो सेपियन या आधुनिक मनुष्य का एक पूर्वज पूर्व एशिया का साइनथ्रोपस या पीकिंग मानव है। ऐसे सात-व्यक्तियों के नर कंकाल 1927 में पीकिंग के दक्षिण पश्चिम में कोई तीस मील की दूरी पर एक गुफा में मिले थे। संभवतः कोई 400,000 वर्ष ई. पू. रहे इस पीकिंग मानव की कुछ शारीरिक विशेषताएँ थीं, जिनमें प्रमुख थें बेलचे के आकार के दांत, जो और किसी आधुनिक नस्ल की अपेक्षा मंगोलाई मनुष्य में अधिक पाए जाते हैं। यह पीकिंग मानव औजार बनाता था, शिकार करता था, आग का उपयोग करता था और संभवतः आदमखोर था।

जहाँ तक इतिहास की जानकारी है, पूर्वी एशिया के पूरे क्षेत्र में, बिल्कुल शुरु के दौर में भी मंगोलाई नस्ल के लोग फैले हुए थे, इसमें जापान भी शामिल है। मंगोलाई मनुष्यों की चमड़ी का रंग उत्तर में हल्के पीले रंग का तथा दक्षिण में (जैसे इंडोनेशिया में) गहरे कत्थई रंग का भी है। चमड़ी के रंग में यह विभिन्नता

उस क्षेत्र विशेष के पर्यावरण के कारण होती है। मंगोलाई नस्ल के लोगों की और विशेषताएं हैं "सीधे काले बाल, अपेक्षाकृत सपाट चेहरे और काली आंखे। पुरातत्वविज्ञान की खोजों से पता चलता है कि मंगोलाई नस्ल के लोग पूर्वी एशिया के उत्तरी और मध्यवर्ती भागों में दक्षिण की ओर और तटीय द्वीपों से बाहर की ओर फैल गये।

जैसा कि आप जानते हैं कि पारिस्थितिकी का विज्ञान लोगों और पर्यावरण के साथ लोगों के संबंध का अध्ययन करता है। पूर्वी एशिया के पूरे क्षेत्र में इस पर्यावरण में घनी वनस्पति है। पर्यावरण क्योंकि तापमान और वातावरण पर निर्भर करता है, इसलिए इन पर विचार करना आवश्यक हो जाता है। प्राकृतिक वनस्पति के विशिष्ट क्षेत्रों में उन क्षेत्रों में पूरे वर्ष होने वाली वर्षा और तापमान के स्वरूपों में पाए जाने वाले अंतरों का प्रतिबिम्ब देखने को मिलता है। जैसे-जैसे हम दक्षिण की ओर बढ़ते हैं, अधिकतम तापमान और वर्षा और मिट्टी की स्थिति की श्रेणियों के कारण ऐसे विशाल भू-भाग सामने आते हैं जहाँ प्राकृतिक वनस्पति में बहुत समानता पायी जाती है। इनसे लगा हुआ वह प्राकृतिक क्षेत्र है जिसका देश के सांस्कृतिक इतिहास में बहुत अधिक महत्त्व है—घास और वनों वाली लोस पहाड़ियों और उत्तरी चीन का मैदानी भाग, जहाँ आज भी केवल कहीं-कहीं खड़े पेड़ों और झाड़ियों से जमीन के नीचे पानी होने का पता चलता है।

पीकिंग मानव के प्लाइस्टोसीन (अभिनूतन) काल में, ठंडे और गर्म युगों के सिलसिले के दौरान, साइबेरिया और मध्य एशिया के ठंडे हवा के ऊंचे दबाव वाले क्षेत्र ने तापमान को भी गिराया और जाड़ों में सूखे की अवधि को भी बढ़ाया। विभिन्न अक्षांशों और उन्नतांशों पर, जलवायु में होने वाले इन बदलावों ने वनस्पति को बहुत अधिक प्रभावित किया है, और कुछ नयी किस्म की वनस्पतियों का जन्म भी हुआ है। इसमें ज्वार की कुछ किस्में शामिल हैं, जैसे मोटा अनाज, और जौ और जई आदि। पूर्वी एशिया में बहुत पहले उगाए जाने वाले और पौधे हैं सोयाबीन, चीनी गन्ना, शहतूत, तिलहन और रोगन देने वाले पेड़।

पूर्वी एशिया के भीतर मनुष्यों का विभाजन नस्ल के आधार पर न होकर भाषा के आधार पर अधिक है। पूर्वी एशिया में सबसे बड़ा भाषायी विभाजन चीनी तिब्बती परिवार है। इस भाषा-परिवार की तुलना अधिकांश यूरोप में फैले बड़े इंडो-यूरोपीय परिवार से की जा सकती है। चीनी तिब्बती भाषायी परिवार का पूर्वी एशिया के मध्य भाग में बहुत महत्त्वपूर्ण स्थान है, जिसमें पूरा मुख्य चीन, तिब्बत, थाइलैंड, लाओस, बर्मा और वियतनाम आ जाते हैं। चीनी-तिब्बती भाषायी परिवार में, सबसे बड़ा उप-विभाजन चीनी है। वे और हिस्सों में चले गये हैं और साथ के समूहों की संस्कृति और भाषा के साथ घुल-मिल गये। पूर्वी एशिया का एक और बड़ा भाषायी परिवार है—आस्ट्रोनीशियाई, जिसमें मलेशिया, इंडोनेशिया, फिलीपीन्स की भाषा और ताइवान के आदिवासियों की बोलियाँ आ जाती हैं।

1.4 आदतें, समाज और संस्कृति

एक समुदाय के रूप में, पूर्वी एशिया के लोगों की अपनी कुछ आदतें हैं। उनके पास सुरुचिपूर्ण साज-सज्जा की अनूठी शैली है, जिसकी अपनी अलग पहचान है। उनकी प्रथाएं सुसंस्कृत हैं और उनके खान-पान की आदतें ऐसी हैं कि उन्हें चापस्टिक और चीनी मिट्टी और रोगन वाली तश्तरियों का प्रयोग करना होता है। उन्होंने चित्रकला और साहित्य का भी विकास किया। लेकिन एक और कारक है जिसने चीनियों को किसी और समुदाय की अपेक्षा शायद कहीं अधिक एकता के सूत्र में बांधा है, यह कारक है लिखने की पद्धति क्योंकि इसके कारण, भाषा और बोलियों के अंतर के बावजूद आपसी समझ संभव होती है। दूसरी ओर, हम देखते हैं कि जापानी भाषा बहु-आक्षरिक या कई सिलेबल वाली है, और कोरियाई भाषा के समान है।

यहाँ जीवन का केन्द्र परिवार रहा है जो कट्टर पितृसत्तात्मक था, लेकिन आज भी यहां परिवार में समुदाय के प्रत्येक व्यक्ति को सुरक्षा मिलती है। एक इकाई के रूप में, परिवार आज भी व्यक्तिवादी है। इसमें अब भी एक श्रेणीबद्धता है, जिसमें हर सदस्य का स्थान है, और उसे उसी के अनुरूप रहना होता है। वे पूर्वजों की पूजा करते हैं और अपने से बड़ों में श्रद्धा रखते हैं। यहाँ की परिवार-व्यवस्था भी तानाशाही वाली रही। इस विशेष तानाशाही व्यवस्था ने राजनीतिक और पारिवारिक दोनों क्षेत्रों में सामाजिक व्यवस्था के लिए आधार बनाने का काम किया। उदाहरण के लिए, चीन में, सम्राट और उनके अधिकारियों की भूमिका को परिवार के पिता के समान माना जाता था। जिला मजिस्ट्रेट को लोगों का "पिता और माता" कहा जाता था।

चीन और जापान दोनों में स्पष्ट आर्थिक, समाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक विकास हुए, इन पर अलग से आगामी इकाइयों में चर्चा की गयी है।

1.5 पूर्वी एशिया और उसके पड़ोसी क्षेत्र

पूर्वी एशिया के क्षेत्र का दूसरे क्षेत्रों के साथ, एशियाई भू-खंड के पार रेशम के मार्ग से होकर और हिंद महासागर से होकर समुद्री रेशम-मार्ग के पार, ऐतिहासिक संपर्क रहा है। ऐतिहासिक दृष्टि से, दोनों ही यात्राएं लंबी और कठिन थीं। इस क्षेत्र के भीतर, चीनी सभ्यता और संस्कृति पड़ोस के क्षेत्रों तक फैली है, कोरिया से होकर जापान में, और दक्षिण में भारत-चीन प्रायद्वीप और इंडोनेशिया में। इस तरह पूर्वी एशिया के पड़ोसी क्षेत्रों में सांस्कृतिक समानताएं बनीं।

शासी, शेसी और होनान वाले भू-भाग चीनी बस्ती और संस्कृति का सबसे पुराना क्षेत्र हैं। इसी क्षेत्र के पूर्वी बाह्यांचल पर पूर्वी एशिया के सबसे पहले शहरों और राज्यों की बुनियाद पड़ी, यह काम बहुत शुरुआत के दौर में हुआ और एक लंबे अरसे तक यह चीनी एकता राज्य की विशेषता का प्रतीक रही। इसकी प्राचीन राजधानियां, चांगा और लोयांग, भी यहीं बनीं। यह पश्चिमी, दक्षिणी और दक्षिण-पूर्वी एशिया के सांस्कृतिक प्रभावों का संगम और एक ऐसा केन्द्र रहा जहां से चीनी लोग, उनकी प्रथाएं और उनकी संस्कृति पड़ोस के क्षेत्रों में फैली।

चीन दक्षिण-पूर्वी एशियाई क्षेत्र (जो कि आधुनिक थाईलैंड के नजदीक है) के संपर्क में आता है। थाई क्षेत्र दक्षिण-पूर्वी, दक्षिणी और दक्षिण-पश्चिमी यूनान से क्वीचो तक फैला है, और एक स्पष्ट सीमा-रेखा इसे काटती हुई चीनी संस्कृति के क्षेत्र को दक्षिण-पूर्वी एशिया के संस्कृति क्षेत्र से अलग करती है। यह बौद्ध धर्म की दो शाखाओं—महायान और हीनयान—का संगम है। महायान महाद्वीपीय एशिया और मध्य चीन के रास्ते आया, और हीनयान भूमि और सागर मार्ग से हिमालय के दक्षिण और भारत से पूर्व की ओर पहुँचा। यहाँ तक कि भारतीय प्रशांत प्रायद्वीप भी बंगाल की खाड़ी और तोकिंग की खाड़ी के बीच एशिया महाद्वीप के विस्तृत भू-भाग से निकलता है। यह एक भौगोलिक इकाई है जो पश्चिमी सीमा पर बर्मा के पहाड़ों से लेकर अन्नाम के पार के प्रशांत तट तक, और विशाल उत्तरी नदियों की गहरी घाटियों के दक्षिणी सिरे से लेकर दक्षिण में सिंगापुर तक फैली है। पहाड़ों और नदियों वाला पूरा दक्षिण-पूर्वी एशियाई प्रायद्वीप दक्षिण की ओर है, और नदियां भी उसी दिशा में बहती हैं, और बड़े-बड़े कस्बों वाले उपजाऊ डेल्टाई मैदान आदि के सारे शहर इसके दक्षिण तट पर स्थित हैं। भौगोलिक दृष्टि से देखा जाए तो, तोकिंग का डेल्टाई मैदान बिल्कुल साफ तौर पर महाद्वीपीय पूर्वी एशिया की ओर ले जाता है। ये क्षेत्र पूर्वी एशिया के चारों तरफ हैं।

समय बीतने के साथ, पूर्वी एशिया टूटने लगा और इसके कुछ भाग पड़ोसी राज्यों और क्षेत्र का हिस्सा बन गये। मध्य एशिया की सीमा पर पड़ने वाले क्षेत्रों के पश्चिम और दक्षिण की ओर के प्रदेशों के साथ लंबे सांस्कृतिक संपर्क थे। ये सीमांत क्षेत्र अब जाकर पूरी तौर पर चीनी रंग में ढल रहे हैं। अब तक वे पूर्वी एशिया के क्षेत्र रहे, लेकिन सांस्कृतिक दृष्टि से नहीं, केवल राजनीतिक अर्थ में।

पूर्वी एशिया और इसके पड़ोसी राज्यों के बीच आर्थिक संबंध की प्रक्रिया में बढ़ोत्तरी और विकास देखने को मिला है। क्षेत्रीय अर्थव्यवस्थाओं को मजबूत करने के प्रयास हुए हैं और इसने दोनों के बीच एक प्रतीकात्मक संबंध का काम किया है, जहाँ एक क्षेत्र अपने अस्तित्व के लिए दूसरे क्षेत्र का पोषण कर रहा है।

चीन समग्र पूर्वी एशियाई सभ्यता का केन्द्रीय बिन्दु है। अपनी भौगोलिक स्थिति के कारण, पहले के समय में मध्य राज्य हमेशा छोटे और कमजोर राज्यों के केन्द्र में रहा, जिनकी अधीनता उनके द्वारा दिए जाने वाले नज़राने में व्यक्त थी। निश्चय ही इस संबंध में कोई साम्राज्यवादी प्रवृत्तियां शामिल नहीं थीं और यह संबंध 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध तक बना रहा, फिर यूरोपीयों और अमेरिका ने इसे तोड़ दिया। दूसरी ओर, जापान कटा हुआ रहा। बहुत बाद में जाकर चीनी प्रभाव जापान में पहुंचा। 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में जाकर जापान ने अपने अधिकार को व्यक्त किया और इस क्षेत्र में एक प्रधान राजनीतिक भूमिका अदा की। इस पर हम आगामी खंडों में चर्चा करेंगे।

पूर्वी एशियाई सामाजिक-सांस्कृतिक वातावरण ने पड़ोसी क्षेत्रों के साथ घनिष्ठ संबंधों के विकास की प्रक्रिया में एक निर्णायक भूमिका निभाई। यह चीनी विशेषता ही थी जिसने दूसरे देशों के साथ मजबूत संबंध बनाने में मदद की।

बोध प्रश्न 2

1) निम्नलिखित में से कौन-से वक्तव्य सही (√) हैं और कौन से गलत (x)? निशान लगायें।

   i) पूर्वी एशिया में मनुष्यों का विभाजन मुख्य तौर पर भाषा के आधार पर है।

   ii) परिवार-व्यवस्था तानाशाही नहीं थी।

iii) पूर्वी एशिया और इसके पड़ोसी क्षेत्रों के बीच कोई आर्थिक संबंध नहीं रहा।

iv) चीन पूर्वी एशियाई सभ्यता का केन्द्रीय बिन्दु रहा है।

परिवार-व्यवस्था की विशेषताए बताइए।

....

....

....

....

....

....

....

....

1.6 सारांश

इस इकाई में हमने पूर्वी एशिया के प्रदेश, देशों और लोगों के विषय में चर्चा की। इस इकाई में पूर्वी एशिया और उसके पड़ोसी क्षेत्र की रूपरेखा, संस्कृति, लोगों, पारिस्थितिकी या पर्यावरण और संबंधों के स्वरूपों की जानकारी दी गयी। इस प्रक्रिया में हमने कुछ विशेषताओं के बारे में जाना जिन्होंने इस सांस्कृतिक क्षेत्र के विकास को प्रभावित किया, और जो इसे समझने के लिए आवश्यक हैं। इनमें शामिल थीं :

- पूरे क्षेत्र की स्थिति को समझना और इसके भौगोलिक परिवेश को निश्चित करना,
- क्षेत्र की पारिस्थितिकी और पर्यावरण,
- लोगों की शारीरिक विशेषताएँ,
- सामाजिक संरचना, आदतें और संस्कृति, और
- विभिन्न देशों के बीच संबंधों के स्वरूप।

1.7 शब्दावली

मुख्यभूमि : किसी महाद्वीप की मुख्य भूमि या उसका सबसे बड़ा भाग, जो अपेक्षाकृत छोटे द्वीप या प्रायद्वीप से भिन्न होता है।

निम्न भूमि : वह भूमि जो आस-पास की भूमि के धरातल से नीची होती है।

उच्च भूमि : वह भूमि जो आस-पास की भूमि के धरातल से ऊँची होती है और जिसमें कई पहाड़ियाँ और पहाड़ होते हैं, समुद्र तल से बहुत ऊँचाई पर स्थित भूमि।

लोस : एक प्रकार की दुम्मट (मिट्टी) जो उत्तरी अमेरिका, एशिया और यूरोप में बहुतायत में पायी जाती है।

महायान : बौद्ध धर्म की एक शाखा जिसका विकास मुख्य तौर पर चीन, कोरिया और जापान में हुआ, यह आदर्शवाद, निस्वार्थ प्रेम, दूसरों के दुखों के निवारण आदि पर जोर देती है।

हीनयान : बौद्ध धर्म की दूसरी शाखा जो महायान से कई मायनों में भिन्न थी।

1.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) i) × ii) √ iii) √ iv) ×

2) अपना उत्तर उपभाग 1.2.1 के आधार पर लिखें।

बोध प्रश्न 2

1) i) √ ii) × iii) × iv) √

2) देखिये भाग 1.4